ईमानदारी, सर्वतोमुखी प्रगति की

सुनिश्चित नीति

श्रीराम शर्मा आचार्य

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

SHRI SANDIPBHAI PATEL,
MOHADEL, GUJARAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ईमानदारी, सर्वतोमुखी प्रगति की सुनिश्चित नीति

इन दिनों प्रचलित अनेक अन्धविश्वासों में से एक यह भी है कि बेईमान नफे में रहता है और ईमानदार घाटा उठाते हैं। यह मान्यता इसलिए पनपी है कि तत्काल के लाभ को ही लाभ माना जाता है और जिसका परिणाम विलम्ब से मिले उसे नकार दिया जाता है।

तत्काल तो चोरी, उठाईगीरी, व्यभिचार, बलात्कार आदि कुकर्म भी मन को भाते हैं, पर कुछ ही समय बाद उनका दुष्परिणाम सामने आ खड़ा होता है। अनीति छिपाये नहीं छिपती। हींग को कई पोटलियों के भीतर बांध कर रखा जाय, पर उसकी गंध प्रकट हुए बिना रहती नहीं। पारा खा लेने पर वह शरीर के अवयवों को फोड़कर कुछ ही समय में फोड़े-चकत्तों के रूप में बाहर निकलता है। कुकर्मों की यह अप्रामाणिकता कुछ ही दिन में चर्चा का विषय बन जाती है और दुराव के सारे प्रयत्न निष्फल हो जाते हैं। निन्दा की चर्चा में ऐसे भी लोग रस लेते हैं, फिर उसके साथ कुछ तथ्य भी जुड़े हुए हों, तो आदत के अनुसार लोग उन्हें बढ़ा-चढ़ा कर कहेंगे ही। काना-फूसी प्रकट विज्ञापन की तुलना में अधिक सशक्त होती है और फैलती भी अपेक्षाकृत जल्दी है। रहस्यों को सर्वसाधारण के लिए पचा सकना कठिन है, ऐसी बातें जो छिपाई जाती हैं, एक के विदित होते ही कानों-कान दूसरे तक, दूसरे से तीसरे-चौथे तक उड़ती हैं और यह समझना कि हमारे किये गये दुष्कृत्य हमी को विदित रहेंगे, अन्य किसी पर प्रकट न होंगे, सर्वथा गलत सिद्ध होता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बेईमानी बरतने वाले को कानूनी दंड तो सरकार ही दे सकती है। पर उसकी अप्रामाणिकता चर्चा का विषय बन कर लोक भर्त्सना का निमित्त तो बनना ही है। ऐसे आदमियों पर कोई विश्वास नहीं करता, वास्ता नहीं रखता और आदान-प्रदान के झंझट में नहीं पड़ता, कारण कि जो दुर्व्यवहार अन्यों के साथ किया जा रहा है, वैसा ही वर्ताव अपने साथ न होगा, उसकी क्या गारंटी है?

हेय आचरण वाले चरित्र की दृष्टि से छूत के रोगी बन जाते हैं। क्षय, कैंसर, कोढ़, दाद आदि को छूत का रोग माना जाता है। वह एक से दूसरे को लगता है। दुष्ट-दुराचारी का अपने घर में आना-जाना हो, तो यह आशंका बनी ही रहती है कि कोई अपने घर के सामान्य बुद्धि वालों को अपनी कुटेव न गले उतार दे।

जिनके साथ दुर्व्यवहार किया गया है, वह उस समय बदला लेने की स्थिति में भले ही न हों, पर पीछे जब कभी दाँव लगता है तब स्वयं या किसी अन्य के द्वारा हानि पहुँचाने और मन का गुबार निकालने का प्रयत्न करता है। प्रतिशोध ऐसा तथ्य है, जो उसके मन में बना ही रहता है। जिसे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से हानि पहुँचाई गयी है। उसका निवारण तभी होता है जब बदला चुक जाय।

द्रोपदी ने कौरवों का उपहास 'अंधों के अंधे होते हैं' शब्द कह कर किया, वह शब्द उन्हें बेतरह चुभ गये और प्रतिफल भयंकर मार-काट के रूप में हुआ। द्रुपद के दरबार में द्रोणाचार्य कुछ याचना करने गये थे और अपने सहपाठी होने का स्मरण दिला रहे थे। इस पर द्रुपद ने पुरानी चर्चा को भुला देने के लिए कहा और बताया कि आज मैं राजा हूँ और आप याचक। द्रोणाचार्य को यह बुरा लगा और द्रुपद को नीचा दिखाने के लिए पांडवों द्वारा आक्रमण करा दिया। महानन्द ने चाणक्य को निमंत्रित ब्राह्मणों की पंक्ति में से कुरूप होने के कारण उठा दिया था, बदले में चाणक्य ने नंदवंश का सर्वनाश कराने पर ही चैन लिया। यह तो मानापमान की घटना है। जिनको दुष्कर्मों द्वारा हानि पहुँचाई गई है। उसकी तिलमिलाहट और भी तीखी होनी चाहिए। क्षमा करने की बात तो परमहंस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

योगी या सशक्त, दीन दुर्बल ही जानते हैं, जिनमें सामर्थ्य है वे बदला चुकाये बिना नहीं मानते । हो सकता है कि जितनी हानि पहुँचाई गई थी, बदले में उससे अनेक गुनी हानि उठानी पड़े । ऐसी स्थिति सामने आने पर ही यह प्रतीत होता है कि अनीति बरतने का व्यवसाय लाभ का नहीं, घाटे का है ।

अदूरदर्शी विवेकहीन ही ऐसा सोचते हैं कि दुराचार छिपा रहेगा या प्रतिशोध कोई चुकायेगा नहीं । वस्तुतः यह भ्रम सर्वथा गलत है । दुरात्माओं के प्रति जो वातावरण बनता है, वह एक के द्वारा न सही दूसरे के द्वारा दंडित कराने की भूमिका बना देती है ।

फिर अपनी अन्तरात्मा का प्रश्न भी कम महत्त्व का नहीं है । कुकर्मों से वह आहत होती है । मनोविकार अन्तर्द्वन्द्व रचते हैं । नस-नाड़ियों में एक विकृत उलझन उत्पन्न करके उनके कारण शारीरिक और मानसिक ऐसे रोग उत्पन्न होते हैं, जो दवा-दारू से भी कन्ट्रोल में नहीं आते । आधुनिक मनो-विज्ञान शास्त्र अनेक प्रयोग–परीक्षणों के द्वारा सिद्ध कर चुका है कि मनो विकार एवम् अनाचार अन्तः क्षेत्र के अचेतन संस्थान को गड़बड़ा देते हैं, फलतः कितने ही प्रकार की सनकें, अनुपयुक्ततायें शरीर और मन में पनपती हैं । फलतः व्यक्ति अर्धविक्षिप्त जैसा हो जाता है । ऐसे व्यक्ति न तो सज्जनों की पंक्ति में बैठ पाते हैं और न किसी महत्त्वपूर्ण कार्य में सफलता ही हस्तगत कर पाते हैं । अप्रामाणिकता ऐसी व्यथा है, जो शब्दवेधी बाण की तरह लौटकर अपने ही पास आ जाती है । दूसरों की अपेक्षा अपना अधिक अनर्थ करती है । बात इतनी भर है कि अंकुर को वृक्ष बनने में देर लग जाती है, आज का जमाया हुआ दूध कल दही बनता है । आज का बोया वृक्ष कुछ वर्ष बाद फल देता है, कर्मफल की प्रक्रिया भी ऐसी है । भले-बुरे कर्मों का प्रतिफल तदनुरूप निश्चय ही मिलता है । स्रष्टा की इस विश्व-व्यवस्था में देर तो लगती है, पर अंधेर नहीं चलता । यह तथ्य हर किसी को गाँठ बांध लेना चाहिए । कुकर्मी व्यक्ति विचारशील व्यक्तियों की भर्त्सना ही नहीं, सहकारिता भी गंवा बैठता है । यह हानि इतनी बड़ी है, जिसकी क्षतिपूर्ति हो ही नहीं सकती ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जिनने सज्जनता का अवलम्बन पकड़ा है और अपने चिन्तन, चरित्र एवम् व्यवहार में ईमानदारी का—सज्जनता का—समावेश रखा है, वे आत्म संतोष अर्जित करते रहते हैं। उस आधार पर उनका आत्मबल बढ़ता है, जो संसार के समस्त बलों में अधिक प्रचंड है। उसी का परिचय क्रिया-कार्यों में मनोबल के रूप में उभरता है। उत्साह और साहस इसी अन्तः स्थिति की परिणति है। इस विशिष्टता में सम्पन्न व्यक्ति जिस कार्य को भी हाथ में लेते हैं, उसे पुरुषार्थपूर्वक सफलता के स्तर तक पहुँचाते हैं। उन्हें व्यवधानों और मार्ग की कठिनाइयों का भी डर नहीं लगता चरित्रवान ही लौह पुरुष कहलाते है। उनके ऊपर जन सम्मान और जन सहयोग की अजस्र वर्षा होती है। संसार के महामानवों की जीवनचर्या ध्यान-पूर्वक पढ़ने से इसी निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ता है कि उनने नीतिवान् जीवन जिया। चरित्र को ऊँचा रखा। सद्व्यवहार को अपनी रीति-नीति का अंग बनाया, फलतः उनकी प्रामाणिकता बढ़ती और प्रख्यात होती गई। ऐसे लोगों के प्रति अनायास ही श्रद्धा उमड़ती है और उनसे सम्पर्क साधने, सहयोग करने की इच्छा उमड़ती है। अपनी निज की और अन्यान्य सत्पुरुषों की श्रद्धा-सहायता के बल पर ही ऊँचे उठना और महान कार्य सफलतापूर्वक सम्पन्न कर सकना संभव होता है, और महामानवों के पास अन्य लोगों की अपेक्षा जो अधिक सामर्थ्य रही है, अधिक विभूतिवान माने गये हैं, उसका रहस्य यही एक है। इसी प्रकार शालीनता का जीवन जीने में प्रत्यक्षतः जो घाटा दीखता है, वह परोक्ष रूप से अनेक गुना लाभ बनकर आता है। जब कि अनाचार अपनाने वाले व्यक्ति धीरे-धीरे सब की, यहाँ तक कि मित्रों-परिजनों की आँखों से गिरते जाते हैं। आड़े समय में मित्र तो क्या उनके परिवार के सगे संबंधी भी काम नहीं आते। मुसीबत में फंसने पर हर व्यक्ति मुँह पिचकाता है और कहता पाया गया है कि अच्छा हुआ— अपनी करनी का फल भुगता जा रहा है।

दुराचरण, अदूरदर्शिताजन्य मूर्खता है। विद्यार्थी चाहे तो अपनी फीस के पैसे जमा न करके सिनेमा देख सकता है या चाट-मिठाई खा सकता है। उस समय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उसे यही प्रतीत होगा कि तात्कालिक लाभ उठाने की बुद्धिमानी अपनाई गई। किन्तु जब स्कूल के रजिस्टर में से नाम कट जाता है। परीक्षा में बैठने का अवसर नहीं मिलता। एक वर्ष खराब जाता है। घर वालों और साथियों द्वारा तिरस्कृत होना पड़ता है, कि तात्कालिक लाभ को ही सब कुछ मान बैठना और उसके भावी परिणामों पर विचार न करना समझदारी की बात नहीं है। कोई किसान खेत में बोने के लिए रखे गये बीज को बेचकर आवारागर्दी में फिरने और गुलछर्रे उड़ाने में खर्च कर सकता है, पर जब खेत बिना बोया हुआ पड़ा रहेगा और फसल काटने के समय खाली हाथ रहना पड़ेगा, तब प्रतीत होता है कि उन दिनों जो गुलछर्रे उड़ाने की जो सूझ सूझी वह समझदारी नहीं, नासमझी थी।

पहलवानों और विद्वानों को आरंभिक दिनों में कड़ी मेहनत करनी पड़ती है और प्रलोभनों-आकर्षणों से अपने को बचाते हुए निरन्तर निष्ठा पूर्वक कार्यरत रहना पड़ता है। तभी प्रशंसनीय प्रगति उनके हाथ लगती है और प्रशंसा के भाजन बनते हैं। मोटे रूप से यह साथियों की मूर्खता मालूम पड़ सकती है, जब वे इधर-उधर मटरगस्ती में समय गंवाते हैं, और उन्हें भी साथ चलने के आग्रह पर इनकारी का उत्तर पाते हैं, तो सहज ही उन्हें कोल्हू का बैल आदि अपशब्द सुनने को मिल सकता है। पर जब उस अवनरत श्रम का उत्साहवर्धक सत्परिणाम सामने आता है, तो प्रतीत होता है कि तात्कालिक मौज-मजा अपनाने की अपेक्षा दूरदर्शिता अपनाकर संयम बरतना ही बुद्धिमत्ता है। चरित्र निष्ठा पर दृढ़ रहने और ईमानदारी की नीति अपनाने में ऐसी ही प्रशंसनीय समझदारी सन्निहित है।

विज्ञजनों ने आदर्शों को प्रत्यक्ष देवताओं की संज्ञा दी है। देवता प्रसन्न होने पर आनन्ददायक और उत्कर्ष में सहायक वरदान देते हैं। पर इन देवताओं को प्रसन्न करने के लिए आरम्भ में तप साधना करनी पड़ती है। इस प्रतिपादन का सीधा अर्थ यह समझा जा सकता है कि आदर्शों के परिपालन में आरम्भिक कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं, पर जब विशिष्टता गुण-कर्म-स्वभाव में रम जाती है, तो समझना चाहिए कि देवता के प्रसन्न होने और वरदान देने का समय आ गया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सत्प्रवृत्तियों के समुच्चय को ही भगवान कहते हैं। नकली भगवान को नकली पूजा पत्री करके नकली वरदान पाने की कोई आशा लगाये बैठा रह सकता है। उन्हें मनुहार उपहास के बल-बूते मनोकामनायें पूरी कर लेने की ललक रह सकती है, पर जिन्हें यथार्थता के क्षेत्र में विश्वासपूर्वक प्रवेश करना है, उन्हें जानना चाहिए कि आत्म परिष्कार और लोक मंगल में परायण रहने का नाम ही योगाभ्यास और तप साधना है। इन्हीं के सहारे भगवत् अनुकम्पा प्राप्त हो सकती है। दृष्टिकोण में उत्कृष्टता का समावेश करना ही स्वर्ग में निवास करने की तरह आनंददायक है। चरित्र में आदर्शवादिता का समन्वय करते हुये वासना, तृष्णा, अहंता की क्षुद्रता को तोड़ फेकना ही भव-बंधनों से मुक्ति पाना है। परमार्थ परा-यणता ही सिद्धि साधना है। संसार के देव-मानवों ने अपने चिन्तन, चरित्र और व्यवहार को उत्कृष्टता की कसौटी पर खरा सिद्ध होने योग्य बनाया है। फलतः वे नर रत्नों में गिने जाते रहे हैं और भगवान की अनुकम्पा के सच्चे अर्थों के पात्र रहे हैं। ऐसे लोग भौतिक क्षेत्र में विभूतिवान् सिद्ध पुरुष कहलाते हैं। कोई जन सम्मान के आधार पर कठिन कामों को सरलतापूर्वक सम्पन्न करते हैं। इस स्तर के आदर्श-वादी हर घड़ी अपनी अन्तरात्मा में उल्लास उमड़ता अनुभव करते हैं। सच्ची भगवत् कृपा का स्वरूप यही है कि उसके आधार पर मनुष्य अपने को अधिकाधिक पवित्रता और प्रखरता से सुसम्पन्न बनाता चले। इस क्षेत्र में जितनी प्रगति होती है, उसी अनुपात से उसकी भगवत् भक्ति सफल सार्थक हुई मानी जाती है। आत्म-कल्याण का, जीवन लाभ का यही स्वरूप है। इसके लिए व्यक्ति को अपनी जीवन-चर्या में ईमानदारी कूट-कूट कर भरनी पड़ती है। उसे अपने प्रति, सम्बद्ध व्यक्तियों के प्रति और समूचे समाज के प्रति ईमानदार रहना पड़ता है, इससे कम में किसी की ईश्वर भक्ति पूर्ण नहीं हुई और जो चरित्र निष्ठा का परिपूर्ण निश्चय के साथ पालन करता है, उसे और कुछ करने की आवश्यकता नहीं है।

सर्वविदित है कि शक्ति के सहारे ही सम्पन्नता एवं सफलता का लाभ मिलता है। इस संदर्भ में हर किसी को विदित रहना चाहिए कि संसार में सबसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बड़ा बल आत्म बल है, उसी के साथ साहस एवं मनोबल भी जुड़ा हुआ है। जिसने यह पूँजी एकत्रित कर ली, उसे हनुमान-अंगद की तरह बलिष्ठ, नल-नील की तरह कुशल और भीम-अर्जुन की तरह सफल माना जा सकता है। गांधी, बुद्ध जैसे आत्मबल के धनी अपने-अपने समय में समूचे वातावरण को उलट देने में सफल हुए हैं। उनकी महत्ताओं के मूल में आदर्शवादी चरित्र निष्ठा ही समाहित देखी जा सकती है।

लोक जीवन में भी जिनका व्यवसाय ऊँचा उठा है, उनने अपनी वस्तु को उत्कृष्टता और व्यवहार की शालीनता का सिक्का जन मानस पर जमाया है। प्रामाणिक वस्तु को लोग मँहगे दाम पर भी खरीदते हैं और व्यवसायी को मालो-माल बना देते हैं। इसके विपरीत जिनका व्यवहार मिलावट, घटिया नकली वस्तुयें बनाने बेचने का है। उनका सस्ता माल भी अविश्वासी होने के कारण कुछ ही दिन में बदनाम हो जाता है और सोने की मुर्गी का पेट चीरने वाले को दिवालिया बना देता है। कारण कि बेईमानी अपनाने वाले के विरुद्ध जो वातावरण बनता है वह कुछ ही दिन में उसकी नाव डुबो देता है।

संसार में प्रामाणिक व्यवसाय ही स्थाई बना, प्रशंसा पात्र हुआ और संचालक को कहीं से कहीं ऊँचा उठा ले जाने में समर्थ हुआ है। यह व्यवसाय आर्थिक ही नहीं, किसी प्रकार का हो सकता है, मनुष्य को अपना जीवन दिशा कोई भी बनानी हो, योजना कोई भी क्यों न चलानी हो उसकी स्थाई सफलता का सूत्र सच्चाई की नीति अपनाने में ही सन्निहित है। बुद्धिमानी इसी में है कि इसी सुनिश्चित वस्तु स्थिति को समझा जाय और उच्चस्तरीय सफलता के लिए धैर्य पूर्वक प्रतीक्षा की जाय। जिन्हें तत्काल लाभ के लिए बेईमानी की नीति अपनाने में संकोच नहीं होता, वे अन्ततः पश्चाताप करते और घाटा उठाते ही देखे गये हैं, भले ही वे कुछ देर तत्काल लाभ के लिए अपनी चतुराई की शेखी बघार लें।

क्रमाङ्क—२४९। युगान्तर चेतना प्रेस, शान्ति कुञ्ज हरिद्वार। मूल्य-४० पैसा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org